विभिन्न धर्मावलम्बियों के साथ मित्रता करने के लिए धार्मिक नेताओं के लिए टूलकिट

इस दस्तावेज़ को डाउनलोड करने के लिए धन्यवाद। हमें आशा है कि इससे आपको धार्मिक नेताओं द्वारा बढ़ावा दिए गए अनुसार विभिन्न धर्मावलम्बियों के साथ मित्रता करने में सहायता मिलेगी (youtube.com/MakeFriends)।

हम इस पर प्रक्रिया की शुरूआत, एक रिश्ता, यहां तक कि मित्रता के रूप में विचार करना चाहेंगे। इस भावना के साथ, यदि आप हमारे साथ परिणाम, अनुप्रयोग, अनुभव, अर्जित शिक्षाओं को साझा करते हैं, तो हमें यह अच्छा लगेगा, ताकि हम सभी उन बातों से लाभान्वित हो सकें जो आप अभियान और टूलकिट से सीखते हैं।

कृपया किस्सों, विचारों, अंतर्ज्ञान और तस्वीरों को हमारे Facebook अकाउंट यानि www.facebook.com/Elijah.Interfaith.Institute पर साझा करें

हम यह भी मानते हैं कि इस प्रक्रिया की सफलता के लिए यह अपेक्षित है कि जिन भिन्न-भिन्न मंचों पर आप और आपके पुराने या नए मित्र आपस में मेलजोल करते हैं, उन पर इसका विस्तृत प्रचार प्रसार किया जाए। हम आपके आभारी रहेंगे यदि आप जब इस अभियान और टूलकिट के बारे में किसी भी मंच पर कुछ भी साझा करते हैं, तो #दोस्त बनाएं हैशटैग का प्रयोग करें। इससे पूरी दुनिया में लोग आपकी पोस्ट्स की पहचान कर पाएंगे।

हम आपके विचार जानने और संपर्क में बने रहने की आशा करते हैं।

मित्रता के साथ,

रब्बी अलोन (गोशेन-गोट्टस्टीन)

एलिजाह इंटरफेथ इंस्टीट्यूट

The Elijah Interfaith Institute
Kesalon 84 90976 Israel
Tel +972-2-672-9276
Fax +972-2-673-3465
info@elijah-interfaith.org
elijah-interfaith.org

THE ELIJAH INTERFAITH INSTITUTE

भाग I

1. अंतरधर्म मित्रता के सिद्धांत

दूसरे धर्मों के लोगों के साथ मित्रता करने से आपका आध्यात्मिक जीवन समृद्ध होगा।

अंतर धर्म मित्रता के मूलभूत सिद्धांतों में निम्नलिखित शामिल है:

- अंतर धर्म मित्रता की शुरूआत हमारी सर्वसामान्य मानवता और अर्थ की मानव खोज की पहचान से होती है। इसमें धर्मों, जिसमें बेहतर और परस्पर एकता के साथ जीवन यापन की खोज और नैतिकता पूर्ण रूप से जीना शामिल है, के बीच में मूलभूत समानताओं की पहचान की जाती है। अंतर धर्म मित्रता का मूलभूत सिद्धांत यह जागरूकता है कि विभिन्न धर्म महत्वकांक्षा और वास्तविकता की उच्चतर आध्यात्मिक समझ-बूझ की ओर जीवन के अभिमुखन, या उच्चतम वास्तविकता, जिसे अधिकांश आस्तिकों द्वारा "ईश्वर" कहा जाता है, के माध्यम से सामान्य जीवन से पार उतरने की कामना की जाती है।
- अंतर धर्म मित्रता उच्चतर सर्वसामान्य हित, जो अपने हित से परे है, पर आधारित है।
- अंतर धर्म मित्रता की विशिष्ट पहचान परस्पर आदान-प्रदान है और इसमें दोनों पक्षों को एक रिश्ते में जोड़ा जाता है। मित्रता आपसी आदान-प्रदान पर आधारित है।

2. कार्य प्रणाली संबंधी अंतर

अंतर धर्म मित्रता ऐसी मित्रता नहीं है, जिसमें धार्मिक अंतर को अलग रखा जाता है, और अभिकल्पित सर्वसामान्यता के हित में इसकी उपेक्षा की जाती है। बल्कि यह, ऐसी मित्रता है जिसमें हमें धार्मिक अंतर के प्रति सजग बनाए रखा जाता है और इस अंतर को शिक्षण, विकास और परिवर्तन के बारे में सीखने का साधन माना जाता है, जो मित्रता के अंतर्गत होते रहते है। धार्मिक अंतर को आशीर्वाद का स्रोत माना जा सकता है।

3. पहचान को बनाए रखना

हमारे धार्मिक समुदाय की पहचान को बनाए रखना हमारे धर्मों की शिक्षाओं के लिए एक मुख्य चिंता का विषय है। अंतर धर्म मित्रता का अभ्यास हमारी पहचान को कमज़ोर करने या उसे कमतर करने का साधन नहीं होना चाहिए। बल्कि, यह तो इसे सुदृढ़ बनाने और इसकी गहनता में बढ़ोतरी का साधन होना चाहिए।

4. वक्तृता अभ्यास

अंतर धर्म मित्रता का अभ्यास इस बात से समीपवर्ती रूप से जुड़ा है कि हम किस तरह से बोलते हैं। अंतर धर्म मित्रता में प्रश्न पूछना एक मूलभूत तथ्य के रूप में शामिल है। मित्र प्रश्न पूछने और उनसे प्रश्न पूछे जाने के इच्छुक होने चाहिए। कठोर प्रश्न, ईमानदार वक्तृता का हिस्सा हैं, लेकिन इनका स्पष्ट रूप से हमले या आलोचन से विभेद किया जाना चाहिए। अंतर धर्म मित्रता में, हमारे मित्र का चेहरा हमेशा हमारे सामने रहता है। हम अपने मित्र की उपस्थिति में जिस तरह से व्यवहार करते हैं, ठीक वैसा ही उसकी अनुपस्थिति में करना सीखते हैं।

5. सक्रिय मित्रता

मित्रता की अभिव्यक्ति के लिए सक्रियता एक प्राथमिक कार्यक्षेत्र है। यदि हमारे कल्याण से संबंधित मुद्दों की उत्पत्ति होती है, तो हमें अपने मित्रों से सहायता, सहयोग और एकजुटता की अपेक्षा होती है। अंतर धर्म मित्रता आदर्शों और उद्देश्यों जैसे सामाजिक न्याय, नफरत, निर्धनता, और बीमारी के लिए संघर्ष के प्रति सर्वसामान्य समर्पण पर आधारित हो सकती है। मित्रों द्वारा साझा की जाने वाली समानता को समाज और विश्व के कल्याण के लिए साझा प्रतिबद्धता और सहयोग के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है।

6. मित्रता एक सामाजिक उपहार

जैसे-जैसे हम अंतरों की उपेक्षा करने से अपने अंतरों की पहचान, समझ और आदर करने की दिशा की ओर अग्रसर होते हैं, हमें एक गहन एकता की खोज करने का अनुरोध किया जाता है जो हमारे अंतरों से कहीं आगे बढ़ कर है। मित्रता में प्रेम की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है, जिसे जागृत रूप से ईश्वर, या अंतिम सत्य में निहित किया जाता है।

भाग II

अंतर धर्म मित्रता

यहां कुछ व्यवहारिक सुझाव दिए गए हैं कि मित्रता का अभ्यास किस तरह से किया जा सकता है, और जिनमें से अधिकांश का विकास एलिजाह विश्व धार्मिक लीडर्स बोर्ड में चर्चाओं से होता है। यदि आपके पास अतिरिक्त सिफारिशें हैं, कृपया हमारे साथ उन्हें साझा करें। हम उन्हें सूची में शामिल कर सकते हैं।

हालांकि एलिजाह द्वारा संवर्धित अंतर धर्म मित्रताएं प्रत्येक व्यक्ति का रिश्ता हैं, हालांकि सहायक परिवेश के संदर्भ में उनको बढ़ावा देना एक सामान्य बात है। धार्मिक लीडर्स के रूप में, आप इन सुझावों को व्यक्तिगत रूप से और विस्तारित सामुदायिक प्रयासों, दोनों के रूप में लागू कर सकते हैं।

1) भोजन साझा करें: दूसरे धर्म को मानने वाले परिवार को घर पर भोजन के लिए आमंत्रित करें। इसकी व्यवस्था दो समागमों के बीच में 'विनिमय' कार्यक्रम के रूप में की जा सकती है, जहां पर प्रत्येक परिवार को मेज़बान और मेहमान बनने का अवसर प्राप्त होगा। और/या सामूहिक भोजन की व्यवस्था करें। इसका लाभ यह होगा कि यदि किसी एक धर्म के अनुयायी के लिए (धार्मिक) आहार संबंधी प्रतिबंध हैं, तो कोई उलझन या असमानता नहीं होती है। मित्रता के रिश्तों के बंधनों का सृजन करने के लिए मिलजुल कर भोजन करने जैसी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती है।
2) 'मित्रता सैर' की व्यवस्था करें। एक संभावना एक धार्मिक स्थल से दूसरे धार्मिक स्थल तक मिल कर साथ चलने की हो सकती है। जब आप बात करते हैं, तो आप आमने सामने होते हैं, लेकिन जब आप साथ-साथ चलते हैं, तो आप ऐसा कंधे से कंधा मिलाकर करते हैं। कोई वैर-भाव या कोई प्रतिस्पिर्धा नहीं होती है। आप एक ही दिशा की ओर अग्रसर हैं। सर्व सामान्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक साथ मिल कर चलना एक साधन है- पैदल चलने की व्यवस्थाओं का प्रयोग ऐसे मुद्दों के संबंध में सार्वजनिक वक्तव्य देने के लिए किया जा सकता है जिनका अंतर धर्म समुदायों द्वारा समाधान अपेक्षित होता है, जैसे कि पवित्र स्थलों के प्रति आदर दिखाना। इसके विभिन्न स्वरूपों में, मानव श्रृंखला बनाना या जब किसी दूसरे धर्म के स्थलों को जोखिम का सामना करना पड़े, तो वहां उपस्थित होना शामिल हो सकता है।
3) संयुक्त रूप से सामाजिक कार्रवाई करना, सामाजिक चुनौतियों के संबंध में प्रतिक्रिया करना। हालांकि ऐसा मित्रता से भिन्न स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है, लेकिन समाज की भलाई के लिए सर्वसामान्य फोकस और सर्वसामान्य लक्ष्य को प्रदान करके इससे मित्रता प्रगाढ़ होती है। स्थानीय परिदृश्य के संबंध में अंतर्ज्ञान को साझा करना- आपके समाज में दूसरों के महत्व के प्रति जागरूकता का विस्तार करना; स्थानीय समुदाय के आर्थिक और सामाजिक विभाजन के प्रति जागरूकता को बढ़ाना।
4) संस्कृति को साझा करें- संगीत, कला, किस्से कहानियां सुनाना और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए अवसर पैदा करें। ऐसा अंतर-धर्म त्यौहारों या एक दूसरे के स्थलों पर बारी बारी से एक दूसरे के समारोहों के आयोजन से किया जा सकता है। संगीत से समस्त बाधाएं दूर हो जाती हैं। कला दूसरे व्यक्ति के हृदय में प्रवेश का द्वार है।
5) सुख-दुख साझा करना - दुखों और उपलब्धियों को साझा करने के लिए अवसर पैदा करना।
6) बौद्धिकता को साझा करना – धार्मिक नेता के रूप में आपकी वृत्ति की विशिष्टता को यहां अभिव्यक्त किया जा सकेगा, क्योंकि विशिष्ट रूप से धार्मिक लीडर ही है जिसे परम्परा और इसके स्रोतों का ज्ञान होता है, और जो बौद्धिकता को साझा

करने को सुगम बनाने के लिए सर्वाधिक योग्य माना जाता है। एक दूसरे की मान्यताओं के बारे में निरन्तर शिक्षण और एक दूसरे के पवित्र स्रोतों से सीखना, एकाधिक स्वरूप में हो सकता है, जिसमें वक्ताओं को आमंत्रित करना, संयुक्त रूप से पाठ-अध्ययन आदि शामिल हो सकते हैं। एक दूसरे से स्रोतों का सम्मानीय रूप से अध्ययन, मित्रता की अभिव्यक्ति के साथ-साथ मित्रता को प्रशस्त करने का तरीका हो सकता है। निम्नलिखित खंड में संयुक्त अध्ययन के लिए सारगर्भित संकेत, निर्देश और नमूना पाठों को उपलब्ध कराया गया है।

भाग III

बौद्धिकता को साझा करना: शैक्षणिक सिद्धांत और कार्य-विधि

बौद्धिकता का साझाकरण धर्मग्रंथों के अध्ययन, उनके निर्वचन के इतिहास, परम्परा के अंतर्गत बौद्धिकता की विभिन्न अभिव्यक्तियों, और मौजूदा लोगों की बौद्धिकता के माध्यम से होता है, क्योंकि उन्होंने ही अपनी परंपरा को स्वरूप प्रदान किया है। गहरे रिश्ते की स्थापना और विभिन्न लोगों के विश्वास को समझने में हम बौद्धिकता के साझाकरण को एक महत्वपूर्ण गतिविधि मानते हैं।

प्रत्येक परम्परा, संदर्भ और इसके इतिहास की जानकारी के साथ, इसके धार्मिक ग्रंथों के निर्वचन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होती है। जब किसी विशिष्ट परम्परा के स्रोतों पर विचार किया जाता है, तो अन्य परम्पराएं अंतर्ज्ञान प्रदान कर सकती हैं। इसलिए, हम मेज़बान समुदाय के प्राथमिक निर्वाचक भूमिका का आदर करते हुए नए क्षितिजों की उत्पत्ति के लक्ष्य के साथ, विभिन्न धर्मों की व्याख्याओं को आमंत्रित करते हैं।

बौद्धिकता के स्वस्थ साझाकरण के लिए एलिजाह विधि

कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जो बौद्धिकता के स्वस्थ साझाकरण की विशिष्टता को दर्शाते हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- प्रत्येक भागीदार की मान्यताओं और धर्मों का सम्मान करना; ऐसे परिवेश का सृजन जहां पर प्रत्येक धर्म को मूल्यवान समझा जाता है और उसका आदर किया जाता है।
- स्रोतों के लिए सम्मान: प्रत्येक पाठ की 'पवित्र स्रोत' के रूप में अभिस्वीकृति की जाती है, और, उस विश्वास या धर्म जिससे इसकी उत्पत्ति हुई है, के अनुपालकों के लिए इसके अंतर्निहित, अधिकृत अर्थ के लिए अध्ययन किया जाता है।
- शैक्षणिक दृढ़ता के प्रति सम्मान: प्रत्येक स्रोत का सम्मान करते हुए और उसे आदर प्रदान करते हुए, उसका विश्लेषण विधिमान्य शैक्षणिक गतिविधियों के अनुसार विश्लेषण किया जाता है।
- एकाधिक निर्वचनों के प्रति उदारता: आदर या सम्मान की सीमाओं के अंतर्गत, इस बहुलवादी शिक्षण परिवेश में प्रश्न पूछने और वार्तालाप को प्रोत्साहित किया जाता है।
- सम्मानीय शिक्षण व्यवस्था में हास-परिहास को बाहर नहीं रखा जाता है और अंतरवैयक्तिक संपर्क की जीवंत भावना को प्रोत्साहित किया जाता है।

पाठ अध्ययन के सिद्धांत

स्रोतों का अध्ययन करते समय:

1) स्रोत के उद्गम, जिसमें लेखक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विश्वास या धर्म प्रणाली के भीतर स्रोत की स्थिति, ऐतिहासिक रूप से स्रोत का प्रभाव और समकालीन अनुयायियों के लिए स्रोत का प्रभाव शामिल है, पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
2) पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्न निम्नलिखित हैं: ' इस पाठ में क्या बौद्धिकता शामिल है? इससे अनुयायियों को बेहतर आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने में किस तरह से सहायता मिलती है? इस शिक्षण के आध्यात्मिक फल क्या हैं?' दूसरों के धार्मिक ग्रंथों के संबंध में टीका-टिप्पणी करते समय: 'इस पाठ या शिक्षण में ऐसा क्या है जिससे मेरे मन में सम्मान पैदा होता है? मेरे लिए क्या-क्या चुनौतियां हैं (जिसमें इसके साथ मेरी कठिनाईयां शामिल हैं)? इसमें मेरे लिए क्या प्रेरणादायक है?'

3) भागीदारों को युग्मों या छोटे समूहों में पाठों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति के लिए विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर होना चाहिए।

4) हालांकि समन्वयकर्ता द्वारा पाठ के उचित/सही निर्विचन के संबंध में सुदृढ़ मत हो सकता है, वैकल्पिक निर्विचनों पर विस्तार से चर्चा की जानी चाहिए और सम्मानीय रूप से उनकी जांच-परख की जानी चाहिए।

5) यदि स्रोतों का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है, तो भागीदारों को अनुवाद की सीमाओं को समझना चाहिए और उन्हें पाठों के एकाधिक समझ-बूझ/निर्विचनों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

6) भागीदारों को इस बात की जानकारी दी जानी चाहिए कि किसी भी धर्म की स्थिति एकाधिकारात्मक नहीं है और समवन्यकर्ता को प्रत्येक विश्वास (धार्मिक) समूह की जटिलताओं और परस्पर विरोधाभासों को सूचित करना चाहिए। भागीदारों को तुलना और चर्चा की अभिव्यक्ति के विस्तार के लिए और अधिक स्रोतों को जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

प्रक्रिया के चरण

एक अच्छे समन्वयकर्ता द्वारा शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से भागीदारों की अगुवाई की जाएगी

- पठन: स्रोत को ऊंची आवाज़ में, अकसर एक से अधिक बार पढ़ना महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक भागीदार ने शब्दों को सुना और समझा है।
- श्रवण: प्रत्युत्तर देने, या आलोचना करने से पहले दूसरों की परम्परा के तर्क को पूर्णरूपेण सुनने और सीखने की कोशिश की जानी चाहिए।
- पूछना: भागीदारों को संबंधित प्रश्नों को पूछने के लिए प्रोत्साहित करने के माध्यम से इमानदारी से समझने के लिए आवश्यक स्पष्टीकरण दें।
- समझना: कि न महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने की कोशिश की जा रही है या कौन से महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए जा रहे हैं और इस प्रक्रिया के दौरान कौन कौन से अन्य मुद्दे उठाए गए हैं?
- तुलना करना: समान मुद्दों, चुनौतियों, भिन्न-भिन्न परम्पराओं में प्रक्रियाओं की पहचान करना। यह जानने की कोशिश करें कि भिन्न-भिन्न परम्पराएं वास्तव में कितने हद तक समान या भिन्न हैं।
- विचारण: महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करें:

  हम जिन विकल्पों को चुनते हैं, उनकी कीमत क्या है? विशिष्ट विकल्पों को चुनने के लिए मेरी परम्परा और दूसरे धर्मों के लोगों की परम्परा द्वारा क्या कीमत अदा की जाती है?

  क्या सहायक साबित हुआ- वे सृजनात्मक तरीके कौन कौन से हैं जिनके संबंध में किसी विशिष्ट मुद्दे के संबंध में मेरी परम्परा द्वारा सामना किया गया? क्या उनका विस्तार दूसरी परम्परा के लिए किया जा सकता है?

  क्या हम चुनौतियों, कठिनाईयों का सामना करने के लिए एक दूसरे से सीख सकते हैं?
- रूढ़िवादिता को दूर करना: भागीदारों को यह स्वयं से यह पूछने के लिए प्रोत्साहित करना कि जिन पहलुओं का अध्ययन किया गया है, उनसे रूढ़िवादिता की पुष्टि हुई है अथवा उसे तोड़ा गया है? परम्परा के प्रति हमारी सोच, रवैय्या अध्ययन प्रक्रिया से किस तरह से परिवर्तित हुआ है?
- प्रेरणा: यह पूछें कि जिन पहलुओं का समन्वित अध्ययन किया गया है, उनमें प्रेरणादायक क्या है? परस्पर अभिप्रेरणा की प्रक्रिया में, व्यक्ति की स्वयं की परम्परा से, विशेषरूप से चर्चाधीन परम्परा से संबंधित समस्याओं के संबंध में कदम उठाने के बारे में, अभिप्रेरणा प्राप्त करें।

नमूना अध्ययन सामग्रियां

एलिजाह इंटरफेथ इंस्टीट्यूट को आपके साथ अध्ययन पाठों के दो सेट्स को साझा करने में प्रसन्नता हो रही है जिनसे आप विभिन्न परम्पराओं के बीच में बौद्धिकता के साझाकरण की प्रक्रिया और गहरा कर पाएंगे। पहले अध्ययन पाठ का शीर्षक, "धार्मिक लीडरशिप- आदर्श और चुनौतियां" है, जो विशिष्ट रूप से धार्मिक लीडर्स के समूहों के लिए उपयुक्त है। इससे दूसरे विश्वास समूहों तक आपकी पहुंच संबंधी कार्य में संवर्धन हो सकता है या धार्मिक लीडर्स की स्थानीय परिषदों के साथ आपके कार्यकरण में प्रगति हो सकती है। इस अध्ययन इकाई में, आज के समय में धार्मिक लीडर होने के क्या मायने हैं? वे चुनौतियां जिनका सामना धार्मिक लीडरशिप को करना पड़ता है, वे स्थाई चुनौतियां जिनके प्रति धार्मिक अनुयायियों और उनके नेताओं का ध्यान पीढ़ियों से आकर्षित किया जा रहा है और हम किस हद तक वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना करते हैं, जो हमारे युग और समय से विशिष्ट रूप से जुड़ी हैं, इन सभी का स्तर क्या है?

धार्मिक लीडरशिप के संबंध में अंग्रेजी (हिन्दी) अध्ययन इकाई तक एक्सेस करने के लिए यहां पर क्लिक करें

दूसरी अध्ययन इकाई को प्रार्थना के लिए समर्पित किया गया है, और लीडर्स और समुदाय में विशिष्ट धर्मावलम्बियों, दोनों की भागीदारी के लिए अधिक उपयोगी हो सकती है। समस्त धार्मिक परम्पराओं में प्रार्थना या ध्यान का घटक शामिल होता है। प्रार्थना एक ऐसा पहलू है जो अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से धार्मिक जीवन को अलग करता है- लेकिन यह किस हद तक एक धर्म को दूसरे धर्म से विभाजित करता है? अध्ययन इकाई से हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि क्या प्रार्थना के भिन्न-भिन्न स्वरूप परम्पराओं के बीच में अदले-बदले जाने योग्य हैं अथवा ये अपनी उद्गम तक सीमित हैं और हम एक दूसरे की प्रार्थना की जिंदगी से किस तरह से प्रेरित हो सकते हैं।

प्रार्थना के संबंध में अंग्रेजी (हिन्दी) अध्ययन इकाई को एक्सेस करने के लिए यहां पर क्लिक करें

भाग IV

अंतर धर्म मित्रता के लिए संरचना का सृजन करना

धार्मिक लीडर के रूप में, मित्रता के विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा देकर और विभिन्न परम्पराओं के बीच में बौद्धिकता के साझाकरण के माध्यम से आप जिस धार्मिक समुदाय की सेवा से जुड़े हैं, और साथ ही विस्तृत समुदाय में परिवर्तन करने की स्थिति में हैं।

दूसरे निकायों के साथ रिश्तों के सृजन और उनकी सुदृढ़ता के माध्यम, या मौजूदा अंतर विश्वास कदमों के साथ तालमेल स्थापित करके इन गतिविधियों का संवर्धन किया जाएगा। आइये अनेक संबंधित परिदृश्यों पर विचार करते हैं:

अपने समुदाय में अंतर-धर्म आयोजनों के लिए अवसरों का सृजन करना, जहां पर ये मौजूद नहीं हैं

1) अपने समुदाय को जानिए: पता लगाएं कि पड़ौसी कौन हैं। क्या आसपास धार्मिक संस्थान हैं जो आपके लिए अच्छे साझेदार हो सकते हैं? क्या आपके समुदाय में ऐसे धार्मिक संस्थान हैं जो आपके संस्थान के साथ संबंधों से लाभान्वित हो सकते हैं? क्या कोई सामाजिक, आर्थिक या राजनैतिक आवश्यकताएं मौजूद हैं जिनसे आपके समुदाय को दूसरे समुदाय के साथ रिश्तों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन मिलता है (या इसके विपरीत)?
2) अज्ञात का डर एक बहुत बड़ा हतोत्साहक है: रिश्तों के सृजन में पहला कदम अज्ञानता को दूर करना है और इस प्रकार भय को हटाना है। यदि दूसरे धर्म के साथ साझेदारी के संबंध में प्रतिरोध है, तो यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- चरण 1: एक दूसरे के साथ सामना करने की स्थिति से पहले, अपने स्वयं के धार्मिक समुदाय के सुरक्षित परिवेश में दूसरे धर्म के बारे में पढ़ने/सीखने के लिए उपलब्ध स्रोतों का प्रयोग करें, जिनमें वे स्रोत भी शामिल करें जिन्हें एलिजाह इंटरफेथ इंस्टीट्यूट द्वारा तैयार किया गया है।

- चरण 2: अपने ही समुदाय स्थल पर पड़ौसी के समुदाय के सदस्यों के साथ मुलाकात करने के लिए उनमे से किसी एक या कुछ सदस्यों को आमंत्रित करें। संभवत: इस अवसर का प्रयोग यह स्पष्ट करने के लिए करें कि आप कौन हैं और आपकी मान्यताएं क्या हैं।
- चरण 3: दूसरे के स्थल पर मुलाकात की व्यवस्था करें। यह उनके परिसरों की सामान्य यात्रा हो सकती है अथवा उनके बारे में अधिक सीखने का अवसर हो सकता है।
- चरण 4: दोनों समूहों के लिए सामाजिक कार्यक्रम का आयोजन करें।
- चरण 5: लोगों के लिए एक दूसरे के अभ्यासों और मान्यताओं के संबंध में एक दूसरे से प्रश्न पूछने का अवसर सृजित करें।
- चरण 6: नियमित बैठक /गतिविधि का आयोजन करें: यह अध्ययन सर्कल के स्वरूप में हो सकता है अथवा यह सामाजिक सेवा प्रदान करने पर आधारित हो सकता है, कोई खेलकूद या हस्तशिल्प आदि गतिविधि हो सकती है या विशुद्ध रूप से कुछ सामाजिक कार्य हो सकता है। महत्वपूर्ण बात नियमित बैठक है।

ख. पहले से ही मौजूद अंतरधार्मिक संरचनाओं के साथ अपने स्वयं के समूह को जोड़ना।

उपरोक्त चरण 1-5 का अनुगमन करें

एक बार जब आप अपने ही समुदाय में एक सहज या सहायक परिवेश का सृजन कर देते हैं, तो मौजूदा /अभिचिन्हित अंतर धर्म संस्थानों के प्रतिनिधियों से उनके साथ जुड़ने के लिए निमंत्रण प्राप्त करें। आपको अपनी अभिव्यक्ति को बताने के लिए उनसे संपर्क करना पड़ सकता है।

ग. मौजूदा संगठनों के साथ "बौद्धिकता साझाकरण" को लागू करना

यदि आप पहले से ही अंतर धर्म संगठन में सक्रिय हैं, लेकिन आप महसूस करते हैं कि अब यह उपयुक्त समय है कि दूसरे संगठनों के साथ रिश्तों और गतिविधियों को मजबूत करने का समय है (जैसा कि इस स्थिति में हम अकसर सुनते हैं), तो हम निम्नलिखित चरणों की सिफारिश करते हैं:

- चरण 1: मुद्दे को उठाएं। दूसरे भी यह महसूस कर सकते हैं कि रिश्तों को मज़बूती प्रदान करने का समय है और स्पष्ट धार्मिक फोकस के साथ अध्ययन तत्व को प्रस्तुत करने का यह सही मौका है।
- चरण 2: अध्ययन संसाधन प्रदान करें। एलिजाह इंटरफेथ इंस्टीट्यूट की वेबसाइट पर बौद्धिकता के साझाकरण के लिए अनेक संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं। इनमें से कुछ को नीचे पाया जा सकता है।
- चरण 3: पाठ संबंधी अध्ययन में भागीदारी करें, जिसमें उपरोक्त भाग III में उल्लिखित मार्गदर्शक सिद्धांतों का अनुपालन करें।
- चरण 4: अध्ययन के दौरान, अपने आध्यात्मिक जीवन और इसकी यात्रा को दूसरे धर्म समूह के सदस्य के साथ मुक्त भाव से साझा करें, विशेष रूप से क्योंकि यह अध्ययन सामग्री से संबंधित है। इसमें व्यक्तिगत भागीदारी करें। आप यह देख सकेंगे कि इस प्रकार के साझाकरण से नए अंतर्ज्ञान की उत्पत्ति होती है और आपने जिन तरीकों की कभी कल्पना भी नहीं की थी, उनसे अपनी मित्रता को अधिक गहराई दे पाएंगे।